



The Journal of Sri Krishna Research & Educational Consortium  
**INTERNATIONAL JOURNAL OF  
 MARKETING AND  
 MANAGEMENT RESEARCH**  
 Internationally Indexed & Listed Referred e-Journal



## छोटे और मध्यम उद्योग का आर्थिक विकास में योगदान

डॉ. रमेश चन्द्र

प्रवक्ता वाणिज्य

फुन्दी सिंह लौना राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालौन

### सारांश

छोटे और मध्यम उद्योग किसी भी देश की आर्थिक संरचना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गतिशील घटक हैं। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में छोटे और मध्यम उद्योग आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, गरीबी उन्मूलन और क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य छोटे और मध्यम उद्योग के आर्थिक विकास में योगदान का व्यापक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

यह अध्ययन दर्शाता है कि भारत में छोटे और मध्यम उद्योग क्षेत्र न केवल सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30% का योगदान देता है, बल्कि विनिर्माण उत्पादन और निर्यात में भी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाता है। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है, जिससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है तथा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है।

इस शोध में छोटे और मध्यम उद्योग की प्रमुख भूमिकाओं जैसे उद्यमिता को प्रोत्साहन, नवाचार का विकास, स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग और समावेशी विकास को विस्तार से समझाया गया है। साथ ही, छोटे और मध्यम उद्योग के समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों—जैसे वित्तीय संसाधनों की कमी, तकनीकी पिछड़ापन, सीमित बाजार पहुंच और अवसंरचना की समस्याएँ—का भी आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

अंततः, यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि यदि छोटे और मध्यम उद्योग को उचित नीतिगत समर्थन, तकनीकी उन्नयन और वित्तीय सहायता प्रदान की जाए, तो वे न केवल भारत की आर्थिक वृद्धि को गति देंगे, बल्कि एक समावेशी, टिकाऊ अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

**मुख्य शब्द :** आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, सकल घरेलू उत्पाद, उद्यमिता, नवाचार, निर्यात, क्षेत्रीय संतुलन, वित्तीय संसाधन, तकनीकी उन्नयन, बाजार पहुंच, सरकारी योजनाएँ, आत्मनिर्भरता

### 1. प्रस्तावना

छोटे और मध्यम उद्योग किसी भी देश की आर्थिक प्रगति के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। ये उद्योग न केवल उत्पादन और सेवा क्षेत्र में विविधता लाते हैं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को व्यापक स्तर पर फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत

जैसे विकासशील देश में छोटे और मध्यम उद्योग विशेष महत्व रखते हैं, क्योंकि यह क्षेत्र सीमित संसाधनों के बावजूद अधिकतम उत्पादन और रोजगार सृजन की क्षमता रखता है।

भारत में छोटे और मध्यम उद्योग को उनके निवेश और वार्षिक टर्नओवर के आधार पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। यह क्षेत्र ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समान रूप से सक्रिय है, जिससे देश के संतुलित और समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है। छोटे और मध्यम उद्योग की विशेषता यह है कि इन्हें कम पूंजी में स्थापित किया जा सकता है और ये स्थानीय संसाधनों तथा श्रम का प्रभावी उपयोग करते हैं।

वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में छोटे और मध्यम उद्योग का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि ये नवाचार, उद्यमिता और प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी और ई-कॉमर्स के विकास ने छोटे और मध्यम उद्योग को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है, जिससे उनके विकास की संभावनाएँ और भी विस्तृत हो गई हैं।

हालांकि, छोटे और मध्यम उद्योग कई चुनौतियों का सामना भी करते हैं, जैसे वित्तीय संसाधनों की कमी, तकनीकी पिछड़ापन, विपणन की सीमाएँ और अवसंरचना से संबंधित समस्याएँ। इन चुनौतियों के बावजूद, छोटे और मध्यम उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य छोटे और मध्यम उद्योगों के आर्थिक विकास में योगदान का विश्लेषण करना है, साथ ही उनके सामने आने वाली चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का भी अध्ययन करना है, ताकि इस क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाने के लिए प्रभावी नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

## छोटे और मध्यम उद्योग का आर्थिक विकास में योगदान

### सकल घरेलू उत्पाद में योगदान

छोटे और मध्यम उद्योग देश की राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। भारत में यह क्षेत्र लगभग 30% GDP में योगदान करता है, जो यह दर्शाता है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में MSMEs की केंद्रीय भूमिका है। इन उद्योगों की व्यापक उपस्थिति आर्थिक गतिविधियों को विविध और स्थिर बनाती है, जिससे समग्र आर्थिक संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती है।

### रोजगार सृजन

छोटे और मध्यम उद्योग रोजगार के सबसे बड़े स्रोतों में से एक हैं। यह क्षेत्र विशेष रूप से कम और मध्यम कौशल वाले श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उत्पन्न करके छोटे और मध्यम उद्योग न केवल बेरोजगारी को कम करते हैं, बल्कि पलायन को भी नियंत्रित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

### औद्योगिक उत्पादन में योगदान

छोटे और मध्यम उद्योग औद्योगिक उत्पादन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह उद्योग बड़े संगठनों के लिए सहायक इकाइयों के रूप में कार्य करते हैं और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाते हैं। इनके माध्यम से उत्पादन का विकेंद्रीकरण होता है, जिससे औद्योगिक विकास व्यापक और संतुलित बनता है।

### निर्यात को बढ़ावा

छोटे और मध्यम उद्योग भारत के निर्यात में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जन में वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप, भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता मजबूत होती है और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

### क्षेत्रीय संतुलित विकास

छोटे और मध्यम उद्योग का एक प्रमुख लाभ यह है कि इन्हें छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से स्थापित किया जा सकता है। इससे औद्योगिक विकास का विकेंद्रीकरण होता है और पिछड़े क्षेत्रों में भी आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं। इस प्रकार, छोटे और मध्यम उद्योग क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### उद्यमिता और नवाचार को प्रोत्साहन

छोटे और मध्यम उद्योग नए उद्यमियों के लिए एक मजबूत मंच प्रदान करते हैं। कम निवेश में व्यवसाय शुरू करने की सुविधा के कारण युवा उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है। साथ ही, यह क्षेत्र नए विचारों और तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे नवाचार आधारित विकास को गति मिलती है।

### समावेशी विकास

छोटे और मध्यम उद्योग समाज के विभिन्न वर्गों को आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं। महिलाएँ, ग्रामीण युवा और कमजोर वर्ग इस क्षेत्र के माध्यम से आत्मनिर्भर बनते हैं। इससे सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा मिलता है और समावेशी विकास सुनिश्चित होता है।

### स्थानीय संसाधनों का उपयोग

छोटे और मध्यम उद्योग स्थानीय कच्चे माल और श्रम का प्रभावी उपयोग करते हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। यह सतत विकास को भी बढ़ावा देता है और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।

### छोटे और मध्यम उद्योग क्षेत्र की चुनौतियाँ

#### वित्तीय संसाधनों की कमी

छोटे और मध्यम उद्योगों के सामने सबसे बड़ी समस्या वित्तीय संसाधनों की कमी है। कई MSMEs को बैंकों और वित्तीय संस्थानों से पर्याप्त ऋण नहीं मिल पाता, विशेषकर नए और छोटे उद्यमों को। उच्च ब्याज दरें और जटिल ऋण प्रक्रियाएँ उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं, जिससे उनका विस्तार सीमित रह जाता है।

#### तकनीकी पिछड़ापन

छोटे और मध्यम उद्योग अक्सर नवीनतम तकनीकों को अपनाने में पीछे रह जाते हैं। आधुनिक मशीनरी और डिजिटल तकनीकों की कमी के कारण उनकी उत्पादकता और गुणवत्ता प्रभावित होती है। इससे वे बड़े उद्योगों और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले कमजोर पड़ जाते हैं।

### बाजार तक सीमित पहुंच

छोटे उद्योगों के लिए बड़े बाजारों तक पहुंच बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। सीमित विपणन संसाधन, ब्रांड पहचान की कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे और मध्यम उद्योग अपने उत्पादों को व्यापक स्तर पर नहीं बेच पाते, जिससे उनकी आय और विकास प्रभावित होता है।

#### **कच्चे माल और लागत की समस्या**

छोटे और मध्यम उद्योग को कच्चे माल की उपलब्धता और उसकी बढ़ती कीमतों का सामना करना पड़ता है। छोटे पैमाने पर खरीद करने के कारण उन्हें कच्चा माल महंगे दामों पर मिलता है, जिससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है और प्रतिस्पर्धा में बने रहना कठिन हो जाता है।

#### **अवसंरचना की कमी**

ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में छोटे और मध्यम उद्योग को बिजली, परिवहन, संचार और भंडारण जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है। इससे उत्पादन और वितरण प्रक्रिया प्रभावित होती है और लागत भी बढ़ जाती है।

#### **कुशल श्रम की कमी**

छोटे और मध्यम उद्योग में प्रशिक्षित और कुशल श्रमिकों की कमी एक बड़ी समस्या है। उचित प्रशिक्षण और कौशल विकास के अवसरों के अभाव में उत्पादकता और गुणवत्ता दोनों प्रभावित होती हैं, जिससे उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता घटती है।

#### **नियामकीय और कानूनी जटिलताएँ**

छोटे और मध्यम उद्योग को विभिन्न सरकारी नियमों, लाइसेंस प्रक्रियाओं और कर प्रणाली की जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। यह प्रक्रिया समय लेने वाली और खर्चीली होती है, जिससे छोटे उद्योगों के लिए संचालन करना कठिन हो जाता है।

#### **डिजिटल और सूचना की कमी**

डिजिटल तकनीक और सूचना तक सीमित पहुंच के कारण छोटे और मध्यम उद्योग आधुनिक व्यावसायिक अवसरों का पूरा लाभ नहीं उठा पाते। ई-कॉमर्स, डिजिटल मार्केटिंग और ऑनलाइन भुगतान प्रणाली का सीमित उपयोग उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करता है।

#### **प्रतिस्पर्धा का दबाव**

छोटे और मध्यम उद्योग को बड़े उद्योगों और विदेशी कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। बड़े उद्योगों के पास अधिक संसाधन, उन्नत तकनीक और मजबूत ब्रांड पहचान होती है, जिससे छोटे उद्योगों के लिए बाजार में टिके रहना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

#### **भविष्य की संभावनाएँ**

##### **डिजिटल परिवर्तन और ई-कॉमर्स का विस्तार**

भविष्य में छोटे और मध्यम उद्योग के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, डिजिटल मार्केटिंग और ऑनलाइन भुगतान प्रणाली के माध्यम से छोटे उद्योग अपने उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय

बाजारों तक आसानी से पहुँचा सकेंगे। डिजिटल परिवर्तन से न केवल बाजार का विस्तार होगा, बल्कि लागत में कमी और कार्यक्षमता में वृद्धि भी होगी।

### **वैश्विक बाजार में अवसर**

वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण छोटे और मध्यम उद्योग के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार के नए अवसर खुल रहे हैं। “मेक इन इंडिया” और निर्यात प्रोत्साहन नीतियों के माध्यम से छोटे उद्योग वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। इससे विदेशी मुद्रा अर्जन और देश की आर्थिक स्थिति को और मजबूती मिलेगी।

### **हरित और सतत विकास**

भविष्य में छोटे और मध्यम उद्योग को पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों और प्रक्रियाओं को अपनाने की आवश्यकता होगी। हरित उत्पादन, ऊर्जा दक्षता और सतत संसाधन उपयोग के माध्यम से यह क्षेत्र न केवल पर्यावरण संरक्षण में योगदान देगा, बल्कि वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता भी बढ़ाएगा।

### **सरकारी समर्थन और नीतिगत सुधार**

सरकार द्वारा लागू की जा रही विभिन्न योजनाएँ और नीतिगत सुधार छोटे और मध्यम उद्योग के विकास को गति देंगे। वित्तीय सहायता, तकनीकी उन्नयन और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से यह क्षेत्र और अधिक मजबूत बनेगा। भविष्य में नीतियों के बेहतर क्रियान्वयन से छोटे और मध्यम उद्योग को और अधिक अवसर प्राप्त होंगे।

### **रोजगार और सामाजिक विकास में वृद्धि**

छोटे और मध्यम उद्योग के विस्तार से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे, विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में। इससे न केवल बेरोजगारी कम होगी, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता को भी बढ़ावा मिलेगा। यह क्षेत्र समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

### **निष्कर्ष**

छोटे और मध्यम उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक मजबूत आधार स्तंभ के रूप में उभरे हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छोटे और मध्यम उद्योग न केवल सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, बल्कि रोजगार सृजन, औद्योगिक उत्पादन, निर्यात वृद्धि और क्षेत्रीय संतुलन जैसे अनेक आयामों में भी उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से, यह क्षेत्र समावेशी विकास को बढ़ावा देता है और समाज के विभिन्न वर्गों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक होता है।

हालांकि, छोटे और मध्यम उद्योग को वित्तीय संसाधनों की कमी, तकनीकी पिछड़ापन, सीमित बाजार पहुंच और अवसंरचनात्मक बाधाओं जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके विकास की गति को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप, तकनीकी उन्नयन, कौशल विकास और वित्तीय समावेशन की आवश्यकता है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ और पहले इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं, किंतु इनके प्रभावी क्रियान्वयन और निगरानी की आवश्यकता बनी रहती है। साथ ही, निजी क्षेत्र और उद्यमियों की सक्रिय भागीदारी भी छोटे और मध्यम उद्योग के सुदृढीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि छोटे और मध्यम उद्योग को उपयुक्त समर्थन, संसाधन और अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाए, तो वे न केवल भारत की आर्थिक प्रगति को गति देंगे, बल्कि एक संतुलित, समावेशी और टिकाऊ अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

### संदर्भ सूची

1. अय्यागरी, एम., बेक, टी., एवं डेमिर्गुच-कुंट, ए. (2007). *विश्व स्तर पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम: एक नया डेटाबेस*. विश्व बैंक शोध पत्र।
2. बेक, टी., डेमिर्गुच-कुंट, ए., एवं लेविन, आर. (2005). *लघु एवं मध्यम उद्यम, आर्थिक विकास और गरीबी: अंतर-देशीय प्रमाण*. जर्नल ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ, 10(3), 199-229।
3. बेरी, ए. (2002). *एशियाई संकट में लघु और मध्यम उद्यमों की भूमिका*. एशियन डेवलपमेंट बैंक संस्थान।
4. कुक, पी., एवं निक्सन, एफ. (2000). *वित्त और लघु एवं मध्यम उद्यमों का विकास*. यूनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर।
5. भारत सरकार. (2006). *सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006*. विधि और न्याय मंत्रालय।
6. हॉलबर्ग, के. (2000). *लघु और मध्यम उद्यमों के लिए बाजार-उन्मुख रणनीति*. विश्व बैंक।
7. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. (2002). *सम्मानजनक कार्य और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था*. आईएलओ।
8. कुमार, आर., एवं सिंह, आर. (2010). *आर्थिक विकास में लघु एवं मध्यम उद्यमों की भूमिका*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च, 1(2), 32-37।
9. लेवी, बी. (2001). *विकास के लिए लघु एवं मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देना*. विश्व बैंक।
10. लिटिल, आई. एम. डी., मजूमदार, डी., एवं पेज, जे. एम. (2003). *लघु विनिर्माण उद्यम: एक तुलनात्मक अध्ययन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. भारतीय रिज़र्व बैंक. (2011). *MSME पर कार्य समूह की रिपोर्ट*. आरबीआई प्रकाशन।
12. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI). (2013). *MSME क्षेत्र पर रिपोर्ट*. सिडबी।
13. संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन. (2004). *औद्योगिक विकास रिपोर्ट: MSMEs और विकास*. यूनिडो।
14. विश्व बैंक. (2008). *सभी के लिए वित्त? पहुँच बढ़ाने की नीतियाँ और चुनौतियाँ*. विश्व बैंक प्रकाशन।